छत्तीसगढ़

8 November, 2011, Daily Chhattisgarh, Raipur

पहले पेज से आगे

होशंगाबाद के किसान क्यों कर रहे हैं आत्महत्या ?

जिससे वह नष्ट हुई। इस कारण उन्होंने ये अतिवादी कदम उठाया। इस जिले में पहले भी 4 किसान आत्महत्या कर चुके हे। ये मौंतें जिले के पूर्वी हिस्से बनखेड़ी, पिपरिया, और सोहागपुर तहसील में हुई हैं।

पिछले कुछ वर्षों से सोयाबीन की फसल में बार-बार नुकसान हो रहा है। और इस जिले में प्रति एकड़ पैदावार कम होती जा रही है। सोयाबीन की जो 9305 किस्म इस बार फेल हुई है, उसकी अपेक्षा एक अन्य किस्म 9560 का उत्पादन ज्यादा है। लेकिन वह भी औसत से बहुत ही कम है। इस बार औसत पैदावार 29 किलोग्राम से लेकर 2 क्विंटल प्रति एकड़ रही है। वर्ष 1994 में मप्र में सोयाबीन की उपज 18 क्विंटल प्रति हैक्टेयर थी जो वर्ष 2008-09 में घटकर 10.91 प्रति हैक्टेयर हो गई। राष्ट्रीय स्तर पर सोयाबीन की उपज 12.35 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। किसानों के मुताबिक एक किस्म तीन-चार साल से ज्यादा नहीं चलती। उसकी अंकुरण क्षमता खो जाती है।

हमारे देश में करीब 30 साल पहले सोयाबीन की खेती शुरू हुई। होशंगाबाद जिले में ही सबसे पहले इसकी शुरूआत हुई। इसकी खेती मुख्य रूप से अमरीका-यूरोप में पशु-आहार के लिए हुई थी। यह कहा गया कि भारतीय भोजन में प्रोटीन की कमी है, जिसकी पूर्ति सोयाबीन से हो सकती है। लेकिन इसकी खली का निर्यात किया गया, जो प्रोटीन वाला हिस्सा था। और तेल की खपत यहां हुई। और इससे हुआ यह कि यहां की परंपरागत दलहन-तिलहन की खेती खत्म हेा गई। यहां मक्का, ज्वार, तुअर, देशी धान, मूंग, उड़द, मूंगफली की खेती या तो कम हो गई या खत्म हो गई। यह संकट तब और बढ़ा जब 1995 में विश्व व्यापार संगठन के तहत हमने खुले बाजार की नीति अपनाई। इसके तहत कृषि वस्तुओं कं आयात को खुली छूट दे दी। आयात शुल्क को कम कर दिया। सोयाबीन की खेती बड़ी लागत की मांग करती है। इसका असर यह हुआ कि हम खाद्य तेल के आयात को बढ़ावा मिला। इस मामले में हम पहले स्वावलंबी हो गए थे, परावलंबी हो गए। हमारे किसानों को काफी घाटा उठाना पड़ा।

सोयाबीन की खेती काफी महंगी लागत वाली है। महंगा बीज, रासायनिक खाद, कीटनाशक दवाएं, नींदानाशक का बेजा इस्तेमाल किया जाता है। पूरी खेती मशीनीकृत हो गई है। ट्रैक्टर और हार्वेस्टर से होती है। इन सबसे बहुत लागत बढ़ गई है। इस धंधे में कई देशी-विदेशी कंपनियां मालामाल हो रही हैं और किसान कंगाल होते जा रहे हैं। अभूतपूर्व संकट से गुजर रहे किसानों का सरकार से मदद की दरकार है। लेकिन इन किसानों के परिजनों को अब तक कोई मदद नहीं मिली है। किसान मर रहे हैं। देश के शीर्ष पांच राज्यों में जहां सबसे ज्यादा किसान आत्महत्या कर रहे है। उनमें मध्यप्रदेश का नाम शुमार है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक मप्र में वर्ष 2004 से 2009 तक 8298 किसानों ने आत्महत्या की है। आंकड़ों के हिसाब से रोज मप्र में 4 किसान जान दे रहे हैं। इसके बावजूद कोई ठोस कदम नहीं उठा रही है। अब किसानों को उम्मीद फसल बीमा से है। पहले राष्ट्रीय फसल बीमा योजना लागू थी जिसका लाभ एकाध वर्ष को छोड़कर किसानों को नहीं मिल रहा था। लेकिन इस बार उसके स्थान पर मौसम आधारित फसल बीमा योजना लागू की गई। जिसके तहत तहसील में वर्षा बहुत कम या अधिक होती है तो इस योजना का लाभ मिलेगा। इस बार करीब-करीब औसत वर्षा हुई है। इसलिए इसका लाभ भी किसानों को कोई खास नहीं मिल पाएगा। यानी जिन दो कंपनियों इफको टोकियो और आई सी आई सी आई-लोम्बार्ड के माध्यम से किसानों का प्रीमियम काटा गया। लेकिन किसानों का उसका लाभ नहीं मिल पाएगा।

अब सवाल है कि इस खेती का विकल्प क्या है? किसान हक्कबक्के हैं। खेती की लागत बढ़ रही है और उपज घट रही है। मौसम बदल रहा है। कभी ज्यादा, कभी कम या अनियमित वर्षा से फसलें प्रभावित हो जाती हैं। कीटप्रकोप से फसलें नष्ट हो जाती है। मध्यप्रदेश सरकार ने जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए जैविक नीति बनाई है। वैकल्पिक खेती की जरूरत शिद्दत से महसूस की जा रही है। होषंगाबाद जिले में इसके कुछ छुट-पुट प्रयोग भी हो रहे हैं। अभी ज्यादा समय नहीं हुआ तब देषी गोबर खाद, देषी बीज और हल-बैल की खेती किसान कर रहे थे। जंगल पट्टी में अब भी किसान गजरा या उतेरा (मिश्रित) खेती करते हैं। गेहूं-चना मिलाकर बिर्रा खेती और मिलवां खेती किसान भूले नहीं हैं। इसमें अब इसमें भी नए अनुभव और मेडागास्कर जैसे नई तकनीक आई है जिससे उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। सोयाबीन की जगह ज्वार जैसी फसलों को आजमाया जा सकता है। देशी बीज और गोबर खाद की खेती यहां के मिट्टी-पानी और मौसम के अनुकूल है, जिसकी सिफारिश इन दिनों कई कृषि वैज्ञानिक भी कर रहे हैं।

(इंक्लूसिव मीडिया फैलोशिप के तहत यह रिपोर्ट लिखी गई है)

अंक जाल - 1886

	22	11	56	28			23	23	
29		7		9		3		4	12
23	9		7				7		20